ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 88-89

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

श्रीराम की अयोध्या का यज्ञीय महत्व

1. डॉ0 प्रेमनाथ पाण्डेय
2. डॉ0 वन्दना पाण्डेय

1–सन्त द्वारिकाप्रसाद पी0जी0 कॉलेज, कोटवा अम्बेडकरनगर, (उ0प्र0), भारत
2–दुलारी महिला महाविद्यालय, अम्बेडकरनगर, (उ0प्र0), भारत

Received- 24 .10. 2021, Revised- 29 .10. 2021, Accepted - 03.11.2021 E-mail: pnpandeyfaizabad@gmail.com

सारांशः ***अयोध्या का गौरवशाली इतिहास यह प्रमाणित करता है यज्ञीय परम्परा इसका वैशिष्ट्य रहा है। राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु यहां का सम्पादन यहाँ की राजा–ऋषि–परम्परा रही है। धार्मिक सहिष्णुता तथा प्रजापलकत्व की लोकसिद्धि का माध्यक यज्ञीय वेदियां थी। अयोध्या में यज्ञ सामान्य जीवन की गतिकी की संचालित करने वाला पक्ष रहा है। यज्ञ वस्तुतः सामाजिक एवं धार्मिक एकीकरण का पवित्र माध्यम था। इक्ष्वाकुंशी राजाओं के लिए पृथ्वी स्वयं एक यज्ञवेदी थी। अपने सद्गुणों और श्लाघनीय श्रेष्ठ लोककल्याणकारी कार्यों की छवि से ये यज्ञों का आवाहन तथा सम्पादन करते थे।***

कुंजीभूत शब्द– यज्ञीय परम्परा, वैशिष्ट्य, धार्मिक उद्देश्यों, सम्पादन, धार्मिक सहिष्णुता, प्रजापलकत्व, लोककल्याणकारी।

अयोध्या में राजकुल की यज्ञीय परम्परा तो थी ही नगर तथा जनपद में प्रत्येक घर में अग्नि चयन तथा यज्ञों का अनुष्ठान होता था। सरयू का तट ऐसे मुनियों तथा संन्सासियों से भरा था जो अपने भक्ति की धारा से सतत् सज्ञीय स्वरूप तैयार करते थे। सगर, भगीरथ, अम्बरीश, दिलीप, रघु, दशरथ एवं राम ने अनेक अश्वमेध यज्ञों का आयोजन किया था। इस परम्परा का अनुपालन शुंग, गुप्त, मौखरि, प्रतिहार, आदि शासकों के काल में हुआ, जिसके अभिलेखिक तथा मौदिक साक्ष्य हैं। अश्वमेध प्रकार के सिक्कों को इस परम्परा से सम्बद्ध किया जा सकता है।

अयोध्या के राजा राम के प्रपितामह दिलीप की गणना शोडश राजिकों में की गयी है। उन्हें एक महान यज्ञकर्ता और दानदाता बताया गया है। महाभारत में तो यहां तक कहा गया है कि दिलीप के राज्य में तीन शब्द गूंजतें थे–स्वाध्यायघोष, जयघोष और दान मांगने वालों के स्वर। दिलीप ने एक सौ एक अश्वमेध यज्ञ किए थे।

श्रीराम के पिता महाराज दशरथ का पुत्रेष्टि यज्ञ प्रसिद्ध है। उनके चारों पुत्र यज्ञ की ही देन है। स्वयं श्रीराम एक महान् यज्ञकर्ता थे।

पद्मपुराण बतलाता है कि राम अन्य अनेक यज्ञों–अश्वमेध, वाजपेय, अग्निस्टोम, विश्वजित, मोमेध, शतक्रतु के आयोजनकर्ता थे। गोस्वामी तुलसीदास ने श्रीराम की यज्ञीय परम्परा का गान किया है।

कोटिन्ह वाजिमेध प्रभु कीन्हे। दस अनेक द्विजन्ह कहँ दीन्हें।
श्रुतिपथ पालक धर्म धुरंधर। गुनातीत अरू भोग पुरंदर।।

अयोध्या जी महत्ता यज्ञ और तप बल के कारण रही है। यह सामान्य गृहस्थों की बस्ती न होकर आरम्भ से ही ऋषियों, मुनियों और संतों की पतःस्थली रही है। इसीलिए भारतीय प्रज्ञा की अनन्त ज्योति को प्रकाशित करने में यह पुरी प्रत्येक कालों में अग्रणी रही है। इसी ज्योति का परिणाम रहा है कि भारत के बाहर श्रीराम एवं श्रीसीता और श्री हनुमान के साथ–साथ सर्वत्र 'अयोध्या' नामक बस्ती मिलती है। प्रत्येक सुन्दर नगर स्वयं को अयोध्या का ही प्रतिरूप मानता है। अयोध्या, अयोध्यापुर, अयोध्यानगर कहां नहीं है। इस पुर की रक्षा देवता और ऋषि लोग करते हैं। प्रभु श्रीराम के दर्शन हेतु देवलोक से नारद, सनक आदि मुनि नित्य आते है

नारदादि सनकादि मुनीसा। दरसन लागि कोसलाधीसा।
दिन प्रति सकल अयोध्या आवहिं। देखि नगरू विरागु बिसरावहिं।।

अयोध्या में ऐसा कौन सा स्थान है? जहां मंदिर, संत और महन्त न रहते हों। प्रत्येक घर मंदिर है, घर में यज्ञशाला है तथा प्रति सन्ध्या वहन होता है। सरयू का तट संन्सासियों से आवासित रहा है। मुनियों ने इस नदी के तटपर जगह–जगह तुलसी का पेड़ लगा रखा था।

कुहँ कुहँ सरिता तीर उदासी। बसहिं ग्यान रत मुनि सन्यासी।
तीर तीर तुलसिका सुहाई। बृंद बृंद बहु मुनिन्ह लगाई।।

वैष्णव परम्परा में यज्ञ सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व माना गया है। वैष्णव मंदिरों के सम्मुख यज्ञवेदियों तथा यज्ञ–मण्डपों का निर्माण एक अनिवार्य वास्तु–विधान है। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान अयोध्या सदैव सज्ञमयी रही है। राम नाम जप और तुलसी की माला तथा यज्ञ की आहुतियाँ अवध की संस्कृति के अनिवार्य तत्व है। वस्तुतः श्रीराम की अयोध्या यज्ञमयी है। अग्नि सर्वश्र अपनी प्रज्जवलता के साथ विद्यमान है।

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. वाल्मीकि रामायण, बालकाण्ड 1.8, 5.5, 5.6, उत्तरकाण्ड, 111.10.
2. अवर्थवेद, 10.2.31, 16.62.3.
3. तैत्तरीय आरण्यक, 1.27.3.
4. पुरातत्त अंक 16 पृष्ठ 70–84.
5. हरिवंशपुराण, 1.54.23, 1.11.13.
6. विष्णुधर्मोत्तर पुराण, 1.202.2.
7. ब्रम्हपुराण, 7.45 एवं 46 अ।
8. अयोध्या का इतिहास एवं पुरातत्व पृष्ठ (नई दिल्ली, 2001).
9. रघुवंश, 16/38–42.
10. ऋग्वेद, 10.75.5–6.
11. शांतिपर्व, 29.79.
12. पद्यपुराण, 6.271.15–18.
13. रामचरितमानस उत्तर0 24/1, 27/1, 28, 28/1, 29.
14. 'द टू इण्डियन एपिक्स, बिस,–ए–बिस, आक्योलाजी, एण्टीक्वीटी, भाग 15 नं0 213, मार्च (लंदन)।
15. ठाकुर प्रसाद वर्मा एवं स्वराज प्रकाशन गुप्त, श्रीरामजन्म भूमि–ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक साक्ष्य, श्रीराम जन्मभूमि न्याय, नई दिल्ली, 2001.

*****